प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में गति नियोजन

भावना नायक

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) में कक्षा का वातावरण सकारात्मक और समृद्ध बनाने के सबसे महत्त्वपूर्ण कारकों में से एक है गति। सुव्यवस्थित गति से युक्त वातावरण, बच्चों को अपनी गति से खोजबीन करने, सीखने और विकसित होने में मदद करता है। इससे उनका अनुभव आनन्ददायक और प्रभावी बनता है।

चित्र 1 : बच्चों के ध्यान की अवधि का उनके सीखने से सीधा सम्बन्ध होता है

शिक्षण के दौरान छोटे बच्चों की रुचि बनाए रखना काफ़ी चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि किसी भी चीज़ में उनके ध्यान की अवधि (attention period) कम होती है। जो चीज़ शुरू में उनके ध्यान को आकर्षित करती है, वह जल्दी ही समाप्त हो जाती है। कभी-कभी तो पाठ पढ़ाने के दौरान ही उनकी यह रुचि कम हो जाती है। और कभी-कभी गतिविधियाँ इतनी तेज़ी से आगे बढ़ती हैं कि वे उन्हें पूरी तरह से समझ ही नहीं पाते हैं। यह स्थिति बच्चों और शिक्षक, दोनों के लिए निराशा पैदा करने वाली होती है। इससे सफल और सार्थक सीखना-सिखाना मुश्किल बन जाता है।

जब शिक्षक के पढ़ाने के तरीक़े बच्चों के ध्यान की अवधि के अनुकूल होते हैं तब कक्षा में सीखने का एक गतिशील और संवाद वाला वातावरण बनता है। इससे बच्चों के लिए सीखना रोचक हो जाता है। शिक्षण की प्रभावी रणनीतियों के लिए यह ज़रूरी है कि सीखने की हर गतिविधि को करने के लिए बच्चों को पर्याप्त समय दिया जाए, और वे एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में सुगमता से जा सकें।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था कक्षाओं में गति : सही सन्तुलन की तलाश

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में गति नियोजन पर ध्यान देने का मतलब है बच्चों को प्रेरित करना, उनके आराम और खोज करने की ज़रूरतों के बीच सन्तुलन बनाना, साथ ही उनका ध्यान और जुड़ाव बनाए रखने के लिए पाठों एवं गतिविधियों के माध्यम से उनकी विकास की प्रगति को बढ़ाना। यानी एक ऐसा वातावरण बनाना जिससे उन्हें लगे कि वे अपनी गति से सीख रहे हैं, ताकि वे पूरी कक्षा के दौरान प्रेरित बने रहें तथा जुड़ाव महसूस करते रहें।

मैं अपनी कक्षा के एक उदाहरण के ज़रिए इस प्रक्रिया को साझा कर रही हूँ।

उस दिन कक्षा में 'हवा' विषय पर पाठ पढ़ाना था। दिन की शुरुआत एक उत्साहपूर्ण सर्कल टाइम के साथ हुई, जब मैंने एक कविता पर चर्चा शुरू की :

The wind brushes past my skin so cool,
a gentle touch, a swirling pool.
It dances free, I feel its might,
A fleeting breeze from day to night.

ठण्डी हवा मेरे बदन को छूकर गुज़र जाती है,
एक कोमल-सा स्पर्श, जैसे तलैया लहराती है,
नाचती है उन्मुक्त, और आवेग से भरपूर
दिन-रात बहती है ये हवा भरपूर।

इसके बाद एक बच्चा, ऋषभ, अपने पिता के साथ साइकिल पर विद्यालय आते समय अपने चेहरे पर हवा के एहसास के बारे में बात करने लगा। फिर मैंने बच्चों को एक चित्र पुस्तक *जैक की पतंग* से एक कहानी पढ़कर सुनाई। इस कहानी में, जैक पतंग उड़ाने की कोशिश करता है, और जब वह उड़ा नहीं पाता तब जैक के पिता उसे हवा की विपरीत दिशा में पतंग उड़ाना सिखाते हैं। कहानी सुनाने के दौरान हुई बातचीत से कक्षा में खोजबीन करने और उत्सुकता का माहौल बना।

इसके बाद, जब बच्चों से कहा, "चलो, अब बाहर चलते हैं!", तब बच्चे, जो अब तक चुपचाप कहानी सुन रहे थे, ऊर्जा और उत्साह से भर गए। रोहन बाँहें फैलाए आगे दौड़ा और चिल्लाया, "हवा बहुत अच्छी लग रही है!" अनन्या ने इशारा करते हुए कहा, "देखो, आम के पेड़ के पत्ते हिल रहे हैं!" इस तरह का अनुभव न केवल बच्चों की समझ को गहरा करता है, बल्कि उन्हें स्फूर्ति के साथ गतिविधि से जोड़े भी रखता है।

हम हवा का आनन्द लेते हुए, उसके बारे में बातें करते हुए बाहर घूमते रहे।

फिर हम कक्षा में वापस आए, और एक चित्र बनाने की रचनात्मक गतिविधि में जुट गए। मैंने कहा, "बच्चो, हवा को महसूस करते ही तुम्हारे दिमाग़ में जो कुछ भी आता है, क्या तुम वैसा कुछ बना सकते हो?" इसके बाद तो रचनात्मकता का एक और दौर शुरू हो गया। यशिका ने गुब्बारे के चित्र में काग़ज़ के रंगीन टुकड़ों को फाड़कर चिपकाया, और एक जीता-जागता गुब्बारा बना दिया। रोहन ने अपनी कल्पना से पत्तियों को ऐसे चित्रित किया मानो वे हवा में लेटी हुई हैं। रंगीन काग़ज़ को अपनी कल्पना के अनुसार काटने और चिपकाने में मैंने और सहायिका ने बच्चों की मदद की।

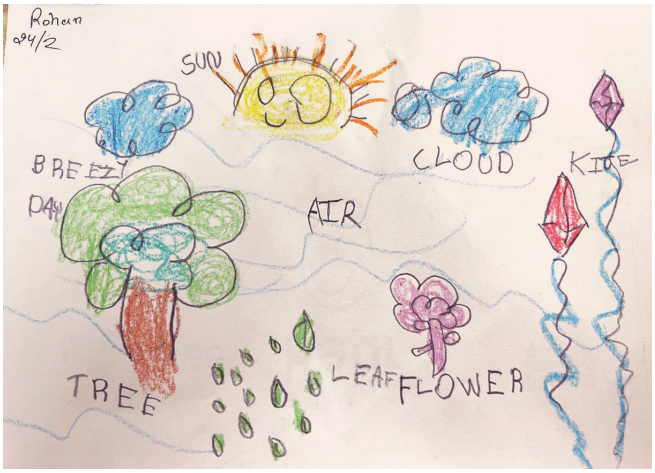

चित्र 2 : बच्चों ने भरी कल्पना और रचनात्मकता की उड़ान

जब बच्चे सक्रिय खोजबीन से रचनात्मक अभिव्यक्ति की ओर जाते हैं तब उनके सीखने की गति बिल्कुल सही रहती है—जो रोमांचक होने के साथ-साथ सुकून देने वाली भी होती है। यदि शिक्षक बच्चों को एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में सहज व सुचारु रूप से ले जाएँ तो उनके सीखने का अनुभव दिलचस्प और सन्तुलित हो सकता है।

एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाना

छोटे बच्चों को अकसर एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाने में कठिनाई होती है, क्योंकि वे निर्देशों से पूरी तरह परिचित नहीं होते। इससे तनाव या भ्रम की भावनाएँ पैदा हो सकती हैं। इन प्रक्रियाओं को सहज बनाने के लिए हम लगातार शान्तिदायक संकेतों (calming cues) का उपयोग करते हैं। मसलन, यह बताने के लिए, कि सफ़ाई करने या खिलौनों को अपनी जगह रखने का समय हो गया है, उन्हें कोई परिचित कविता सुनाना। जब बच्चों को नई गतिविधि करने के लिए प्रेरित करना हो तब हम कुछ ऐसे वाक्यों का उपयोग करते हैं। मसलन, "चलो, कुछ नया करने के लिए तैयार हो जाओ!"; "आओ, कुछ रोमांचक काम करें!"; आदि। उदाहरण के लिए, जब बच्चे कहानी सुनाने से चित्रकारी की ओर जाते हैं तो हम कविताएँ गाकर सुनाते हैं। हम जिन संकेतों का उपयोग करते हैं, उनमें से एक यह है :

Hey! Little kids hey! Little kids
Story is done, colours are fun
Take out your crayons,
Let's start one by one.

नन्हे-मुन्ने बच्चो, ओ, प्यारे-प्यारे बच्चो
हुई कहानी पूरी, अब रंगों की बारी,
क्रेयॉन निकालो झट से,
शुरू करो चित्रकारी।

इसी तरह, जब इनडोर से आउटडोर खेल खेलने के लिए निकलना होता है तब बच्चों को इकट्ठा करने, और उनके साथ योजना बनाकर मज़ेदार गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए कुछ इस प्रकार के संकेत देती हूँ। मसलन,

"कुछ मज़ा हो जाए, मस्ती हो जाए। तैयार हो?"

इससे उन्हें आगे आने वाली गतिविधियों के लिए मानसिक रूप से तैयार होने में मदद मिलती है। यह अभ्यास न केवल उनके मन को शान्त करता है, बल्कि सामाजिक कौशलों को मज़बूत करने के अवसर भी देता है। जैसे—प्रश्न पूछना, आगामी गतिविधियों के बारे में विचार साझा करना, आदि।

गति नियोजन के सकारात्मक परिणाम

बच्चे पूरी कक्षा में उत्साहित और सक्रिय रहते हैं। इससे उन्हें अपना कार्य समय पर पूरा करने में मदद मिलती है। वे छोटी-छोटी गतिविधियों का मज़ा लेते हैं, और अपनी भागीदारी दिखाते

हैं। जैसे भाविका ने ही पूछा, "क्या मैं अलग-अलग रंगों के कुछ और गुब्बारे बना सकती हूँ?" बच्चों के उत्साह ने कक्षा को जीवन्त और रुचिकर बनाए रखा।

बच्चे बदलती गतिविधियों से परिचित हो जाते हैं। इससे तरह-तरह की गतिविधियों से गुज़रना आसान हो जाता है। मेरी कक्षा में अब वे बस एक सरल-सी कविता के संकेत से, कहानी सुनाने से लेकर चित्रकारी तक की गतिविधियों में जुट जाते हैं। उन्हें ज़्यादा परेशानी नहीं होती है।

इस सबसे मुझे पाठ योजना बनाने, और अपने दैनिक उद्देश्यों को पूरा करने में मदद मिलती है।

गति नियोजन से किसी विषय पर 15 मिनट की चर्चा करने, और उसके बाद एक गतिविधि पूरी करने में मदद मिलती है।

मैं बिना किसी परेशानी के सीखने-सिखाने के सभी क्षेत्रों को समेट सकती हूँ। मसलन, 5 मिनट के लिए वायु अवलोकन और उसके बाद 5 मिनट की पेंटिंग ने बच्चों को विषय से जोड़े रखा, और उनके गत्यात्मक कौशल को बढ़ाया।

मेरी कक्षा में कारगर रणनीतियाँ

हर बच्चे के लिए कारगर सन्तुलन बनाने हेतु शिक्षक निम्नलिखित तकनीकों पर विचार कर सकते हैं :

1. अवलोकन और समायोजन

शिक्षकों को यह देखने के लिए समय निकालना होगा कि बच्चे विभिन्न गतिविधियों पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। क्या वे सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, या उनका ध्यान इधर-उधर भटक रहा है? आगे आने वाले पाठों के लिए गति को समायोजित करने में इन अवलोकनों का उपयोग करें, क्योंकि लचीलापन महत्त्वपूर्ण है। समायोजन करने के लिए तैयार रहें।

2. बदलाव के क्रम को विवेक से काम में लाएँ

छोटे बच्चों के लिए एक गतिविधि से दूसरी में जाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। अगली गतिविधि हेतु उन्हें तैयार करने के लिए शान्त तरीक़ों का इस्तेमाल करते हुए सहज बदलाव की योजना बनाना बेहतर होता है। कोई गीत या थोड़ी देर आराम बच्चों को अपना ध्यान फिर से केन्द्रित करने में मदद कर सकता है।

3. तरह-तरह की गतिविधियाँ करना

तरह-तरह की गतिविधियों को आपस में मिलाएँ। मसलन, व्यावहारिक परियोजनाएँ, कहानी सुनाना, समूह चर्चा, शान्त चिन्तन, आदि। ये विविधताएँ अनुभवों का ऐसा मिश्रण बनाती हैं जो सीखने की विभिन्न शैलियों और ज़रूरतों को पूरा करता है।

चित्र 3 : चित्रकारी के लिए प्रोत्साहित करना बच्चों की अभिव्यक्ति को पंख देना है

4. काम और आराम के बीच सन्तुलन बनाएँ

बच्चों को सक्रिय सहभागिता की अवधि के साथ-साथ शान्त चिन्तन या आराम के क्षण भी दें। उदाहरण के लिए, किसी उत्साहपूर्ण समूह गतिविधि के बाद, कुछ मिनटों के लिए, जिस तरह बताया जाए उस तरह साँस लेने, एक छोटी कहानी सुनाने, या स्वतंत्र रूप से खेलने का समय दें। यह सन्तुलन ऊर्जा के स्तर और ध्यान को बनाए रखने में मदद करता है।

5. समय का प्रबन्धन विवेक से करें

यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि गतिविधियाँ न तो बहुत लम्बी हों न बहुत छोटी। इससे बच्चों की रुचि बनाए रखने और सीखने के अवसरों को बढ़ाने में मदद मिलेगी। दृश्य टाइमर का उपयोग करने से बच्चों को समय की स्पष्ट समझ बनाने में भी मदद मिल सकती है।

इन रणनीतियों को लागू करके, शिक्षक अपनी कक्षा की गतिविधियों के गति नियोजन को बेहतर कर सकते हैं ताकि सभी बच्चों को सीखने का अधिक प्रभावी और आनन्ददायक अनुभव मिल सके।

निष्कर्ष

मैंने अपनी कक्षा में कई बदलाव देखे हैं। जैसे, कोई शर्मीला बच्चा गति-आधारित कला सत्र के दौरान खिल उठता है, या एक चंचल बच्चा समय-आधारित गणित के खेल के दौरान ध्यान केन्द्रित करने लगता है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

भावना नायक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन धमतरी, छत्तीसगढ़ की ईसीसीई टीम में कार्यरत हैं। उन्हें बच्चों के लिए सीखने को मज़ेदार बनाकर उनके साथ काम करना पसन्द है।

सम्पर्क : bhavna.nayak@azimpremjifoundation.org